



शासकीय एवं गैर शासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

सुभाष चंद्र पाल

शोधार्थी, शिक्षा शास्त्र, आजीवन शिक्षा प्रसार एवं समाज कार्य अध्ययनशाला, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर
(म.प्र.)भारत, Email : scpal22888@gmail.com

डॉ. शालिनी पांडे

प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, जैन कॉलेज, ग्वालियर (म.प्र.)भारत, Email: dr.shalinidixit30@gmail.com

Paper Received On: 21 AUG 2026

Peer Reviewed On: 25 SEPT 2026

Published On: 01 OCT 2026

Abstract

प्रस्तुत शोध पत्र में उच्च माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं गैर शासकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करने के उद्देश्य से मध्य प्रदेश के ग्वालियर जिले के शासकीय विद्यालयों के 300 अध्यापकों तथा गैर शासकीय विद्यालयों के 300 अध्यापकों पर डॉ. उम्मे कुलसुम द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति मापनी को प्रशासित किया गया। प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान के अंतर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया आंकड़ों के विश्लेषणात्मक अध्ययन के निमित्त वर्णनात्मक और अनुमानात्मक सांख्यिकीय विधि का अनुप्रयोग कर परिणाम प्राप्त किए गए हैं। उपलब्ध परिणामों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि शासकीय एवं गैर शासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति के मध्य सार्थक अंतर नहीं हैं। शासकीय एवं गैर शासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति लगभग समान हैं। जिससे परिणामों में समानता की दृष्टि प्रदान करते हैं। जिनको बनाए रखने हेतु दोनों परिवेशों में शैक्षिक संसाधनों, नवाचारों एवं प्रौत्साहन योजनाओं समान सुलभता सुनिश्चित की जानी चाहिये।

मुख्य शब्द: शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति, शासकीय, गैरशासकीय, अध्यापक, उच्च माध्यमिक विद्यालय, तुलनात्मक अध्ययन।

प्रस्तावना:

शिक्षा किसी भी समाज के बौद्धिक, सामाजिक तथा आर्थिक विकास की आधारशिला है। विद्यालय वह प्रमुख संस्थान है जहाँ बालक केवल विषयगत ज्ञान ही नहीं, बल्कि अनुशासन, नैतिकता, सहयोग, लोकतांत्रिक मूल्यों और जीवन-कौशलों को भी ग्रहण करता है। इस सम्पूर्ण प्रक्रिया का केन्द्र बिन्दु अध्यापक होता है। अध्यापक की

विषय-विशेषज्ञता, शिक्षण-कौशल, व्यक्तित्व तथा विद्यार्थियों के प्रति संवेदनशील व्यवहार जितना महत्वपूर्ण है, उतनी ही महत्वपूर्ण उसकी शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति भी है। अभिवृत्ति अध्यापक के विचारों, भावनाओं, रुचियों, विश्वासों और व्यवहारिक प्रतिक्रियाओं का वह समन्वित रूप है, जो उसके शिक्षण-कार्य की गुणवत्ता को प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। उच्च माध्यमिक स्तर विद्यार्थियों के जीवन का अत्यंत निर्णायक चरण होता है। इसी स्तर पर विद्यार्थी उच्च शिक्षा, व्यावसायिक चयन, प्रतियोगी परीक्षाओं तथा सामाजिक उत्तरदायित्वों के लिए स्वयं को तैयार करते हैं। इस अवस्था में अध्यापक की भूमिका केवल पाठ्यक्रम पूरा करने तक सीमित नहीं रहती, बल्कि वह विद्यार्थियों के मार्गदर्शक, प्रेरक, परामर्शदाता तथा व्यक्तित्व-निर्माता के रूप में भी कार्य करता है। यदि अध्यापक शिक्षण को केवल नौकरी या दायित्व के रूप में ग्रहण करता है, तो उसके शिक्षण में यांत्रिकता, सीमित सहभागिता और कम नवाचार दिखाई दे सकता है। इसके विपरीत, यदि वह शिक्षण को सामाजिक परिवर्तन और मानवीय विकास के माध्यम के रूप में स्वीकार करता है, तो वह शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को अधिक प्रभावी, रचनात्मक और छात्र-केंद्रित बनाने का प्रयास करता है। शासकीय एवं गैर शासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों की कार्यप्रणाली, प्रशासनिक व्यवस्था, संसाधनों की उपलब्धता, विद्यार्थी-समुदाय, अभिभावकीय अपेक्षाएँ, सेवा-सुरक्षा, उत्तरदायित्व तथा संस्थागत वातावरण में विविधताएँ देखी जाती हैं। शासकीय विद्यालय सामान्यतः व्यापक सामाजिक वर्गों, विशेषकर ग्रामीण, आर्थिक रूप से कमजोर तथा वंचित समुदायों तक शिक्षा पहुँचाने का दायित्व निभाते हैं। वहीं गैर शासकीय विद्यालयों में प्रबंधन की अपेक्षाएँ, परिणामोन्मुखी संस्कृति, संसाधन-संपन्नता तथा प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण अपेक्षाकृत अधिक हो सकता है। इन भिन्न परिस्थितियों का अध्यापकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। विशेष रूप से महिला अध्यापिकाओं के संदर्भ में यह विषय और भी संवेदनशील बन

जाता है। अनेक महिला अध्यापिकाएँ शिक्षण-कार्य के साथ पारिवारिक दायित्वों, सामाजिक अपेक्षाओं तथा कार्यस्थल की चुनौतियों के बीच संतुलन स्थापित करती हैं। फिर भी वे विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, संवेदनशीलता, अनुशासन और सामाजिक चेतना विकसित करने में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। समुदाय की बालिकाओं के लिए महिला अध्यापिकाएँ प्रेरणा, सुरक्षा और आत्मनिर्भरता का सशक्त उदाहरण भी बनती हैं। अतः उनके शिक्षण के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन शिक्षा की गुणवत्ता तथा लैंगिक-संवेदनशील विद्यालयी वातावरण को समझने में उपयोगी हो सकता है।

समस्या कथन: शासकीय एवं गैर शासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

शोध समस्या में प्रयुक्त चरों की संक्रियात्मक परिभाषा:

शोध समस्या में शासकीय एवं गैर शासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। अतः इसमें निम्नलिखित चर प्रयुक्त किए गए हैं।

स्वतंत्र चर:

- **विद्यालय का प्रकार:** शासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय तथा गैर शासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय

स्वतंत्र चर उस चर को कहते हैं जिसका प्रभाव किसी अन्य या दूसरे चर पर प्रदर्शित होता है अथवा जिसके आधार पर अन्यत्र चर पर प्रभाव में अंतर दिखता है। इस शोध अध्ययन में उच्च माध्यमिक विद्यालय का प्रकार के रूप में वर्गीकृत है -शासकीय अथवा गैर शासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय स्वतंत्र चर है क्योंकि यह अध्यापकों की शिक्षण अभिवृत्ति में अंतर करने वाले प्रमुख कारक माना गया है

आश्रित चर:

➤ शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति

आश्रित चर उस चर को कहते हैं। जिसमें स्वतंत्र चर के परिणाम स्वरूप परिवर्तन देखा जाता है अथवा आश्रित चर पर स्वतंत्र चर का प्रभाव प्रदर्शित है। जिसे प्रमाणित शिक्षण अभिवृत्ति के माध्यम से मापा गया है।

इस प्रकार प्रस्तुत अध्ययन में विद्यालय के प्रकार (शासकीय एवं गैर शासकीय) स्वतंत्र चर, जबकि शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति परितंत्र चर के रूप के रूप में प्रयुक्त की गई है, अन्य व्यक्तिगत एवं व्यवसायिक चरों को नियंत्रित रखकर अध्यापकों की शिक्षण अभिवृत्ति में पाए जाने वाले अंतर का निष्पक्ष तथा वैज्ञानिक विश्लेषण किया गया है। शोध समस्या में प्रयुक्त चरों का संक्रियात्मक अर्थ इस प्रकार है।

उच्च माध्यमिक शिक्षक: प्रस्तुत शोध अध्ययन में शिक्षक से अभिप्राय उन अध्यापकों से है। जो शासकीय एवं गैर शासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों में नियमित रूप से शिक्षण कार्य कर रहे हैं। तथा जिनकी नियुक्ति शासन द्वारा एवं प्रबंधन द्वारा की गई है अथवा शासन द्वारा मान्यता प्राप्त है

शासकीय विद्यालय: प्रस्तुत अध्ययन में शासकीय विद्यालय से आशय है जो शासन द्वारा पूर्ण वित्त सहित संचालित होते हैं जिनका संचालन प्रदेश सरकार के नियंत्रण में है उनमें नियुक्ति से लेकर समस्त कार्य शासन के अधीन होते हैं

गैर शासकीय विद्यालय: प्रस्तुत अध्ययन में गैर शासकीय विद्यालय से अभिप्राय है। जो प्रबंध समिति द्वारा संचालित होते हैं। जिनकी नियुक्ति एवं वित्त का समस्त अधिकार प्रबंध समिति के पास सुरक्षित होते हैं। तथा यह विद्यालय प्रबंध समिति द्वारा पूर्ण संचालित होते हैं

शिक्षण अभिवृत्ति: प्रस्तुत अध्ययन में शिक्षण अभिवृत्ति से अभिप्राय अध्यापक की वह मानसिक एवं भावनात्मक प्रवृत्ति से है। जो उसके शिक्षण व्यवसाय, कक्षा- कक्ष शिक्षण, शैक्षणिक, प्रक्रिया, वालकेंद्रित अभ्यास, शिक्षक तथा विद्यार्थियों के प्रति उसके विचारों तथा भावनाओं में परिलक्षित होती है। उपरोक्त शोध अध्ययन में डॉ० उम्मे कुलसुम द्वारा निर्मित शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति मापनी द्वारा कुल अंकों के आधार पर मापा गया है। इस मापनी के उत्तर पत्रक द्वारा दिए गए उत्तरों के अनुसार प्राप्त स्कोर को उसकी शिक्षण अभिवृत्ति का मापक माना गया है। उच्च अंक सकारात्मक शिक्षण अभिवृत्ति तथा निम्न अंक नकारात्मक शिक्षण अभिवृत्ति को प्रदर्शित करते हैं।

तुलनात्मक अध्ययन: प्रस्तुत अध्ययन में तुलनात्मक से अभिप्राय शासकीय एवं गैर शासकीय अध्यापकों की शिक्षण अभिवृत्ति के औसत अंकों की तुलना करना है। जिसके लिए प्रयुक्त सांख्यिकी प्राविधि टी-परीक्षण का प्रयोग किया गया है। इस प्रकार प्रस्तुत शोध अध्ययन में सभी मुख्य चरों को स्पष्ट एवं मापनी के रूप में

परिभाषित किया गया है। जिसमें अनुसंधान की प्रक्रिया, परिणाम एवं निष्कर्ष वैज्ञानिक, वस्तुनिष्ठ तथा विश्वसनीय बन सके।

सम्बंधित शोध साहित्य की समीक्षा:

यादव आर० एवं बाजपेयी एन० (2026) द्वारा किए गए अध्ययन में ग्रामीण तथा शहरी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया। अध्ययन से ज्ञात हुआ कि ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की अभिवृत्ति में सांख्यिकीय रूप में सार्थक अंतर विद्यमान है। अध्ययन में शहरी विद्यालयों के शिक्षकों की समग्र शिक्षक अभिवृत्ति ग्रामीण विद्यालयों के शिक्षकों की तुलना में अधिक सकारात्मक पाई गयी है।

पुष्पा और कुमार पी० (2025) के द्वारा राजस्थान के संदर्भ में ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों की समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया। निष्कर्ष के रूप में प्राप्त किया कि शहरी तथा ग्रामीण अध्यापकों के दृष्टिकोण में संसाधनों, प्रशिक्षण तथा समुदाय समर्थन की भिन्नताओं के कारण अंतर होता है। जिससे समावेशी अभ्यास के प्रभावी कार्यान्वयन में भिन्नता आती है। अतः ग्रामीण शिक्षकों की तैयारी में वृद्धि के लिए लक्षित व्यवसायिक विकास आवश्यक है।

यादव, ए० के० (2023) ने अपने अध्ययन में अनुदानित एवं गैर अनुदानित बी० एड० महाविद्यालयों अध्ययनरत छात्राध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं का शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया। अध्ययन से ज्ञात हुआ कि दोनों ही प्रकार के प्रशिक्षण महाविद्यालय में अध्ययनरत छात्राध्यापक एवं छात्राध्यापिकाओं की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति लगभग समान है।

दुबे, ए० के० (2023) ने अपने अध्ययन में सरकारी व निजी प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया। निष्कर्ष के रूप में सरकारी व निजी प्राथमिक विद्यालयों की महिला शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति पुरुष शिक्षकों से उच्च है। तथा सरकारी एवं निजी प्राथमिक विद्यालयों के पुरुष शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति समान दृष्टिकोण प्राप्त होता है।

गुप्ता, आर० (2023) ने वाराणसी जनपद के विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया। निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते हैं। कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के संबंध में शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है। अथवा दोनों प्रकार के अध्यापकों की शिक्षण अभिवृत्ति एक समान है।

पाल, वाई० के० (2023) ने प्राथमिक शिक्षकों की सृजनशीलता तथा उनकी वैज्ञानिक अभिवृत्ति एवं कृत्य संतोष पर पढ़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया। निष्कर्ष में पाया कि प्राथमिक शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की लचीलापन, विभा प्रवाह, का वैज्ञानिक अभिवृत्ति पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं है। प्राथमिक शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की वैज्ञानिक अभिवृत्ति सामान प्रदर्शित होती है।

अध्ययन का उद्देश्य:

- ❖ शासकीय एवं गैर शासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

अध्ययन की शून्य परिकल्पना:

- ❖ शासकीय एवं गैर शासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है

अध्ययन की सीमाएं:

- प्रस्तुत अध्ययन में मध्य प्रदेश के ग्वालियर जिले को शामिल किया गया है।
- प्रस्तुत अध्ययन में केवल चयनित शासकीय एवं गैर शासकीय विद्यालयों तक सीमित हैं।
- प्रस्तुत अध्ययन केवल उच्च माध्यमिक विद्यालयों पर केंद्रित हैं।
- प्रस्तुत अध्ययन में केवल शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति सूची के माध्यम से प्राप्त आंकड़ों का उपयोग किया गया है।
- प्रस्तुत अध्ययन विशेषतः शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति तक सीमित है, अन्य मनोवैज्ञानिक पहलुओं को शामिल नहीं किया गया है।

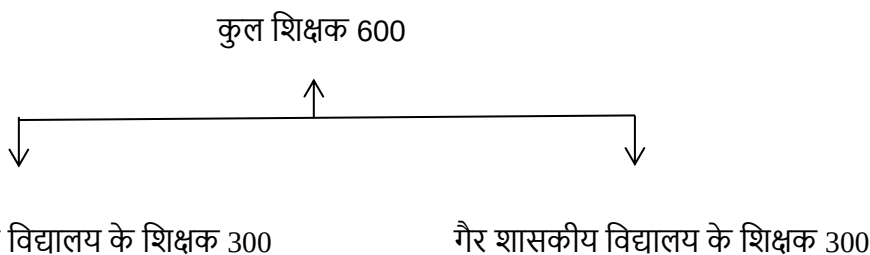
शोध प्रविधि: प्रस्तुत शोध अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान के अंतर्गत सर्वेक्षण विधि का अनुप्रयोग किया गया है।

शोध का प्रकार: प्रस्तुत शोध प्रकृति वर्णनात्मक एवं तुलनात्मक प्रकार का है।

शोध का क्षेत्र: प्रस्तुत अध्ययन शासकीय एवं गैर शासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों तक सीमित है।

शोध में प्रयुक्त जनसंख्या: प्रस्तुत शोध में मध्य प्रदेश के ग्वालियर जिला के शासकीय एवं गैर शासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के सभी शिक्षक शामिल हैं।

प्रतिदर्श: प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत शासकीय एवं गैर शासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों की सूची से 25 शासकीय विद्यालय तथा 25 गैरशासकीय विद्यालय से कुल 600 उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों का सरल यादृच्छिक विधि से निम्न प्रकार चयनित किया गया है।



स्वतन्त्र न्यादर्श: विद्यालय के प्रकार (शासकीय एवं गैर शासकीय)

परितन्त्र न्यादर्श: शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति

नियंत्रित चर:

- अध्यापकों की शैक्षणिक योग्यता
- विषय विशेषज्ञता
- शैक्षणिक अनुभव।
- लिंग

शोध उपकरण: प्रस्तुत शोध में डॉ. उम्मे कुलसुम द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति मापनी का उपयोग किया गया। इस मापनी में 55 पदों वाले एक लिफ्ट उपकरण है, जिसमें 5 उप पैमानों का वर्गीकरण है। प्रथम उप पैमाने में 10 पद हैं। द्वितीय उप पैमाने में 6 पद, और तृतीय उप पैमाने में 28 पद, चतुर्थ उप पैमाने में 5, पद व पंचम उप पैमाने में 6 पदों को सम्मिलित किया गया है। इस प्रकार मापनी के समस्त पैमाने के पदों की संख्या 55 हैं। जो भावी और कार्यरत अध्यापकों की व्यावसायिक दृष्टिकोण के एक विशेष पहलू से संबंधित हैं। मापनी में शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में निम्न पांच उप पहलू शामिल हैं।

🚦 **अकादमिक**

🚦 **प्रशासनिक**

🚦 **सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक**

🚦 **सह पाठ्यक्रम**

🚦 **आर्थिक**

आंकड़ों का संग्रहण:

1. जिला शिक्षा अधिकारी ग्वालियर के कार्यालय से ग्वालियर जिले के उच्च माध्यमिक विद्यालयों की प्रमाणित सूची प्राप्त की गयी।
2. प्राप्त सूची से शासकीय एवं गैर शासकीय विद्यालयों की एक नई सूची तैयार की गई तत्पश्चात सरल यादृच्छिक विधि का प्रयोग करते हुए अध्ययन हेतु शासकीय एवं गैर शासकीय विद्यालयों का चयन किया गया है।
3. अध्ययन में चयनित विद्यालयों के प्रधानाचार्यों से अनुमति प्राप्त कर अध्यापकों को शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति मापनी को वितरित किया गया।
4. मापनी के सभी पदों को भरवाकर उसके बाद में मापनी का अंकन किया गया।
5. मापनी के योगात्मक अंकन के आधार पर शासकीय एवं गैर शासकीय अध्यापकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकीय प्राविधियाँ:

प्रस्तुत शोध अध्ययन में आंकड़ों के विश्लेषण करने के निमित्त निम्न सांख्यिकीय विधियों का अनुप्रयोग किया गया है।

- ✓ माध्यमान

✓ मानक विचलन

✓ टी- सांख्यिकीय

आंकड़ों का विश्लेषण:

शासकीय तथा गैर शासकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करने के उद्देश्य से 300 शासकीय विद्यालय के अध्यापक एवं 300 गैर शासकीय विद्यालयों के अध्यापकों पर डॉ. उम्मे कुलसुम द्वारा निर्मित मानकीकृत शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति सूची को प्रशासित किया गया। उपयुक्त आंकड़ों के आधार पर मध्यमान (Mean), मानक विचलन (Standard Deviation), तथा सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए टी-परीक्षण (t-Test) की गणना की गई प्राप्त परिणाम तालिका 1 में इस प्रकार प्राप्त हुये हैं।

तालिका 1: शासकीय एवं गैर शासकीय विद्यालयों के अध्यापकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति के प्राप्त

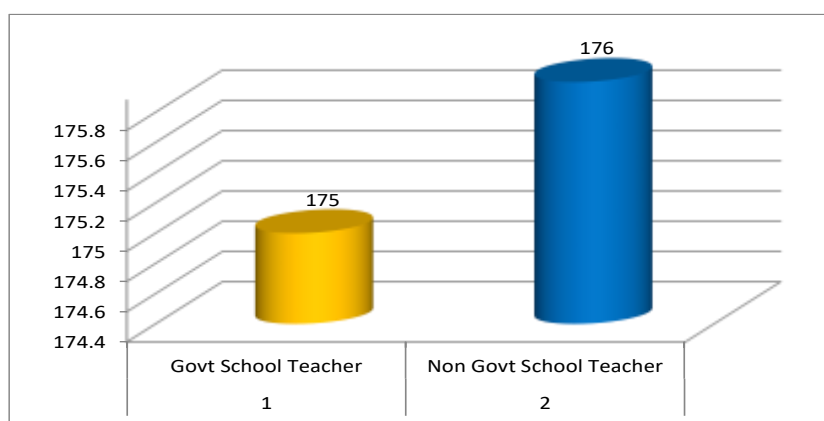
परिणामों का माध्यमान, मानक विचलन तथा टी-मान

विद्यालय के प्रकार	अध्यापक की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मुक्तांश	टी- मान	प्रायिकता मान	सारणी मान	परिणाम
शासकीय	300	175	16.1	598	0.90	.368	.05 सार्थकता	.05 व .01 सार्थकता स्तर पर असार्थक
अशासकीय	300	176	16.0					

सारणी मान- .05 सार्थकता स्तर पर-1.96

01 सार्थकता स्तर पर- 2.58

तालिका 1. के अवलोकन से प्रदर्शित होता है कि शासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान 175 तथा मानक विचलन 16.1 और गैर शासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान 176 तथा मानक विचलन 16.0 हैं। जिससे स्पष्ट होता है कि शासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिव्यक्ति का (मध्यमान 175), गैर शासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का (मध्यमान 176), से तुलनात्मक रूप से बड़ा है। इस प्रकार परिणाम बार चित्र-1 में प्रदर्शित हैं।



जब शासकीय एवं गैर शासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में अंतर का अध्ययन करने की उद्देश्य से टी- परीक्षण को प्रशासित किया गया है। तब टी - परीक्षण का मान 0.90 आया जो (df) मुक्तांश 598 पर .05 सार्थकता के स्तर पर सारणी मान 1.96 तथा .01 सार्थकता स्तर पर सारणीय मान 2.58 से कम है। जिससे स्पष्ट होता है। कि टी- परीक्षण का मान दोनों सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है। इसकी पुष्टी प्रायिकता मान (P-Value) .368 से भी होती है। क्यों कि यह .05 से अधिक है। जो .05 व .01 पर सार्थकता स्तर पर सार्थक अन्तर को प्रदर्शित नहीं करता है। अतः प्रस्तुत अध्ययन की शून्य परिकल्पना H_0 , “शासकीय एवं गैर शासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।” अतः शून्य परिकल्पना सत्य सिद्ध होती है। परिणाम से स्पष्ट होता है। कि शासकीय एवं गैर शासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं प्रदर्शित होता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि शासकीय एवं गैर शासकीय विद्यालयों के अध्यापकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति लगभग समान है।

परिणामों के शैक्षणिक अनुप्रयोग: प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट होता है। कि शासकीय एवं गैर शासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है। इससे प्रदर्शित होता है। शासकीय एवं गैर शासकीय विद्यालय के अध्यापकों की शिक्षण अभिवृत्ति लगभग समान है। इससे स्पष्ट होता है कि शिक्षण अभिवृत्ति समान है तो सामान शैक्षिक वातावरण एवं समान सहभागिता अवसर की समानता के माध्यम से कहा जा सकता है की भौतिक सुविधाओं के आधार पर अभिवृत्ति में भी समानता पाई जा सकती है।

संदर्भ सूची:

- यादव, आर. एवं बाजपेयी, एन.(2026) ग्रामीण तथा शहरी माध्यमिक विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन ,शोध समागम 09(01) पृ. सं. 10-18
- सुरभि, एवं सिंह, के. के.(2026).शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सहसंबंधात्मक अध्ययन, शिक्षा संवाद 04(01) सितम्बर-2026 पृ. सं. 181-187 /
- भटनागर, एस. एवं पाल, एस. सी.(2021) परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की सृजनात्मक शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति के विभिन्न कारकों के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन, कला सरोवर 24(3) पृ. सं. 339-342 /
- अग्रवाल, वाई. पी.(2007). सांख्यिकीय की विधियाँ: अवधारणाएँ, अनुप्रयोग एवं गणना (द्वितीय संस्करण). स्टर्लिंग पब्लिशर्स ।
- बेस्ट, जे. डब्ल्यू., एवं कान्ह, जे. वी.(2016). शिक्षा में अनुसंधान (दस वाँ संस्करण). पीयरसन एजुकेशन
- बुच, एम. वी. (1974-1988). भारतीय शिक्षा में अनुसंधान का द्वितीय सर्वेक्षण. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद नई दिल्ली ।
- Rekha Rani & Dr. Kaushal Sharma. (2026). MADHYAMIK STAR PAR SHIKSHKO KI ABHIVRUTTI KA UNAKI SHIKSHAN PRABHAVSHILATA PAR PADANE VALE PRABHAV KAVISHLEHSANATMAK ADHYAYAN. Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language, 14(73), 306–318. <https://doi.org/10.5281/zenodo.18770353>
- Pushpa & Kumar,P.(2025) A comparative study of urban and rural teacher's attitude towards inclusive education in Rajasthan. shodhshauryam international scientific refereed research journal, 8(2) P. 78-88,
- Sarkar, S. & Bishwas P.(2024) Secondary School Teachers attitude towards the teaching profession in relation to their adjustment in schools international journal of literacy and education,4(2),186-192, <https://doi.org/10.22271/27891607.2024>